‘कहाँ गए सारे गुण्डा थोप?’

कथा-पुस्तक पर आधारित वर्कशीट्स

कथा यहाँ पढ़ें :

http://publications.azimpremjifoundation.org/2772/1/GundaThope%20-%20Hindi.pdf

कथानक :
सुहाना सुब्रमण्यन, हरिणी नागेन्द्रा, सीमा मुंडोली

हिन्दी अनुवाद :
सुशील जोशी

सम्पादन (हिन्दी) :
राजेश उत्साही

चित्रांकन :
सुहाना सुब्रमण्यन, निहारिका वर्मा

लेआउट डिज़ाइन :
क्षीरजा कृष्णन

अगस्त 2021

वर्कशीट 1 :

लोक-संसाधन क्या हैं?

'कहाँ गए सारे गुण्डा थोप?' कथा-पुस्तक पर आधारित

उद्देश्य :

- यह समझना कि लोक-संसाधन क्या हैं।
- लोक-संसाधनों के विविध उपयोग समझना।
- यह जानना कि साझा संसाधनों के साथ क्या हो रहा है।

लोक-संसाधन क्या हैं?

लोक-संसाधन वे संसाधन होते हैं जिनका उपयोग और सामूहिक प्रबन्धन किसी समुदाय द्वारा किया जाता है। गाँवों में जंगल, नदियाँ, झीलें, गुण्डा थोप, गोचर (चराई भूमि) और तालाब लोक-संसाधन हैं। इनसे समुदाय को भोजन, पानी, औषधियाँ, जलाऊ और इमारती लकड़ी मिलती है। इसके अलावा घर में उपयोग हेतु तथा औरों को बेचने के लिए कई कच्चे माल जैसे लाभ मिलते

हैं। स्थानीय समुदाय इन प्राकृतिक संसाधनों की देखभाल भी करते हैं। इन लोक-संसाधनों के उपयोग को लेकर कुछ नियम-क़ायदे भी बनाते हैं। हम कह सकते हैं कि शहरों में झीलें और बगीचे लोक-संसाधन के उदाहरण हैं।

गुण्डा थोप भी लोक-संसाधन हैं क्योंकि...

गुण्डा थोप लोक-संसाधन हैं क्योंकि स्थानीय समुदाय पेड़ों को लगाने, उनका दोहन करने और देखभाल में शामिल होते हैं। थोप में आम, जामुन, इमली, कटहल, बरगद, गूलर और पीपल जैसे पेड़ लगाने का काम स्थानीय बाशिन्दे करते हैं। इन पेड़ों से मिलने वाले फलों, औषधियों, ईंधन और लकड़ी का उपयोग बाशिन्दे करते हैं। थोप का उपयोग चराई के लिए और मवेशियों के लिए चारा इकट्ठा करने के लिए भी किया जाता है। गाँव के बच्चे थोप में फल खाने और पेड़ों के बीच खेलने के लिए आते हैं। थोप गाँव की बैठकों, सामुदायिक सम्मेलन करने और त्यौहार मनाने के लिए सामुदायिक स्थल भी हैं। कभी-कभी थोप में छोटे मन्दिर भी होते हैं और लोग पेड़ों की भी पूजा करते हैं। अतीत में, पंचायत और गाँव के लोग न सिर्फ पेड़ लगाते थे बल्कि थोप की हिफ़ाज़त भी सुनिश्चित करते थे। उदाहरण के लिए, बग़ैर अनुमति पेड़ काटने वाले को सज़ा दी जाती थी। दूसरी ओर, यदि किसी की पहुँच निजी तौर पर पेड़ तक नहीं है, तो उसे अपने उपयोग के लिए टहनियाँ काटने की अनुमति भी दी जाती थी।

कुछ करने को

गतिविधि 1 : गाँव/मोहल्ले तथा लोक-संसाधन का मानचित्रण

शिक्षक के साथ विद्यार्थी गाँव/मोहल्ले के भ्रमण पर जाएँ और निम्नांकित चीज़ें पहचानें :

1. गाँव/मोहल्ले की सीमाएँ
2. गाँव/मोहल्ले की सीमा में विभिन्न लोक-संसाधन (झीलें, तालाब, कुएँ, उद्यान, चौपाल (पेड़ और पूजा स्थल से युक्त चबूतरा), थोप, गोचर या लोक-संसाधन माना जाने वाला कोई भी अन्य स्थल।
3. अन्य महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक या मानव-निर्मित रचनाएँ, जैसे गाँव/मोहल्ला केन्द्र, पहाड़ियाँ, पहाड़, नाले, दोनों तरफ पेड़ लगी सड़कें, बस स्टॉप, स्कूल, वार्ड/पंचायत कार्यालय जैसे सरकारी दफ़्तर, सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, बड़े आवास और प्रमुख सड़कें।

विद्यार्थियों को समूहों में बाँटे। कक्षा में उनसे गाँव का मानचित्र बनवाएँ। जिसमें भ्रमण के दौरान उपरोक्त बिन्दु क्रमांक 1, 2 और 3 में पहचानी गई चीज़ों को दर्शाया जाएगा।

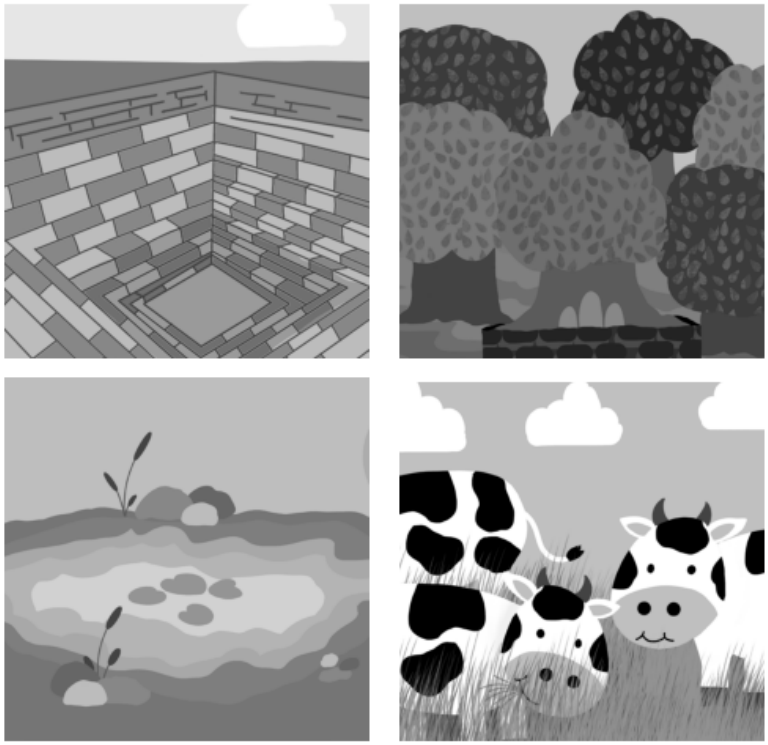

गतिविधि 2 : लोक-संसाधन के विभिन्न उपयोग तथा उपयोग करने वालों की जानकारी

अपने गाँव में किसी लोक-संसाधन की पहचान कीजिए। यह कोई गुण्डा थोप, कोई झील या गोचर हो सकता है। यदि आप शहर में रहते हैं, तो उद्यान या झील जैसा कोई शहरी लोक-संसाधन चुन लीजिए। सुबह करीब 2 घण्टे (सुबह 7 से 11 के बीच कभी भी) और शाम को करीब 2 घण्टे (दोपहर 3 से 7 के बीच कभी भी) लोक-संसाधन का अवलोकन कीजिए। अपने अवलोकन नीचे दी गई तालिका में भरिए।

लोक-संसाधन का प्रकार :

लोक-संसाधन को दिया गया कोई विशेष नाम :

क्रमांक	प्रश्न	सुबह	शाम
1	लोक-संसाधन में आगंतुक कौन थे?	(उदाहरण के लिए, मछुआरे, गाँव की महिलाएँ, चरवाहे)	
2	लोक-संसाधन में आगंतुकों द्वारा की गई गतिविधि और यह गतिविधि कहाँ की गई?	(उदाहरण के लिए मछुआरे मछली पकड़ते हैं, महिलाएँ कपड़े धोती हैं, चरवाहे गायों को चराते हैं)	
3	लोक-संसाधन से क्या एकत्रित किया जा रहा और कहाँ से?	(उदाहरण के लिए झील से मछली, चारे के लिए घास, झील से पानी)	

गतिविधि 3 : लोक-संसाधन में परिवर्तन और समयरेखा

अपने गाँव के बुज़ुर्गों से बात करें। यदि आप किसी बड़े शहर में रहते हैं, तो ऐसा कोई व्यक्ति ढूँढिए जो लम्बे समय से शहर के उस इलाक़े में निवास कर रहा हो। उनसे नीचे दिए गए प्रश्न पूछकर जवाब लिख लीजिए। यदि वे सहमत हों तो आप मोबाइल या लैपटॉप पर उनकी बातचीत का वीडियो भी रिकॉर्ड कर सकते हैं।

गतिविधि 1 के लिए चुने गए लोक-संसाधन के लिए निम्नलिखित जानकारी जुटाइए :

1. यदि लोक-संसाधन का कोई विशेष नाम है, तो वह नाम क्यों रखा गया है?
2. अतीत में लोक-संसाधन का क्या उपयोग किया जाता था?
3. यदि अब इसका उपयोग नहीं होता है या उपयोग में बदलाव आया है, तो ऐसा क्यों हुआ?
4. अतीत में लोक-संसाधन का प्रबन्धन कैसे होता था?
5. आजकल इनका प्रबन्धन कैसे होता है?

पूछने के लिए अन्य प्रश्न :

गाँव/शहर के मोहल्ले में कौन-से विभिन्न लोक-संसाधन थे?
क्या वे लोक-संसाधन आज भी मौजूद हैं?
यदि नहीं हैं, तो

1. लोक-संसाधन का क्या हुआ?
2. लोक-संसाधन में किस तरह के बदलाव हुए हैं?
3. चूँकि अब लोक-संसाधन अस्तित्व में नहीं हैं, तो लोग क्या करते हैं? (उदाहरण के लिए, यदि लोक-संसाधन कोई कुआँ था जो अब नहीं है, तो लोग पानी कहाँ से लेते हैं?)
4. लोगों को क्या लगता है कि लोक-संसाधन अब क्यों नहीं हैं?

उपरोक्त साक्षात्कार के बाद, आपके पास उपलब्ध जानकारी के आधार पर लोक-संसाधन की एक मोटी-मोटी समयरेखा तैयार कीजिए। इससे लोक-संसाधन की ऐतिहासिक कहानी के साथ यह जानने में मदद मिलेगी कि पिछले कई वर्षों में लोक-संसाधन किस तरह बदला है। इसके ज़रिए आप यह भी समझ पाएँगे कि लोक-संसाधन के साथ लोगों के रिश्ते किस तरह बदले हैं।

गुण्डा थोप की समयरेखा का उदाहरण :

गुण्डा थोप की समयरेखा

1950 - गाँव के नज़दीक, गाँव के केन्द्र से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर एक विशाल गुण्डा थोप था। गाँववासी गुण्डा थोप का उपयोग विभिन्न ज़रूरतों के लिए किया करते थे। पेड़ों की रक्षा के लिए एक समूह था। पेड़ों की रक्षा की ज़िम्मेदारी समूह के सदस्य बारी-बारी उठाते थे। अधिकांश पेड़ नीम, आम और इमली के थे।

1990 - पास का शहर बढ़ने लगा, गाँव के कई लोग काम की तलाश में गाँव से शहर चले गए।

2000 - के दशक के शुरू में - गाँव में बच्चों के लिए प्राथमिक शाला निर्मित की गई।

2010 – गाँव में हाई स्कूल बना। जल्द ही गाँव के निकट निर्माण कार्य शुरू हो गया जहाँ गुण्डा थोप स्थित थे।

2015 – बच्चों के लिए उद्यान बनाने के लिए बाक़ी बचे पेड़ भी काट दिए गए। उद्यान को बागड़ से घेर दिया गया और चराई की मनाही हो गई। गाँववासी अब पेड़ों का उपयोग किसी भी काम के लिए नहीं कर सकते थे। उद्यान में थोप के समय का एक पीपल वाला चबूतरा था, जिसे नहीं हटाया गया।

2020 – गाँव के आस-पास कई कॉलोनियाँ, स्वतंत्र मकान और बड़ी-बड़ी दुकानें बन गईं। अब यह इलाक़ा अधिक शहरीकृत होने लगा है। गाँव में रहने वाले कई युवा तो जानते तक नहीं कि इस गाँव में गुण्डा थोप था, क्योंकि उन्होंने इसे कभी देखा ही नहीं है।

वर्कशीट 2 :

लोक-संसाधन के लिए *मनरेगा*

'कहाँ गए सारे गुण्डा थोप?' कथा-पुस्तक पर आधारित

उद्देश्य :

- *मनरेगा* के बारे में जानना।
- यह समझना कि *मनरेगा* लोक-संसाधन की हिफ़ाज़त में कैसे मदद कर सकता है।

मनरेगा क्या है?

मनरेगा यानी महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोज़गार गारण्टी क़ानून एक भारतीय श्रमिक क़ानून है जो देश भर में गाँव के निवासियों के लिए 'काम का अधिकार' सुनिश्चित करता है। *मनरेगा* योजना के तहत गाँव के उन सारे परिवारों के लिए प्रति वर्ष 100 दिन के रोज़गार की गारण्टी है जिनके वयस्क सदस्य अकुशल श्रमिक के रूप में काम करने को तैयार हों। *मनरेगा* का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की वित्तीय व सामाजिक सुरक्षा को बेहतर करना है। यदि व्यक्ति को 15 दिनों के अन्दर काम नहीं मिलता, वे बेरोज़गारी भत्ते के पात्र होते हैं।

मनरेगा लोक-संसाधन की रक्षा में मदद कर सकता है क्योंकि...

मनरेगा के ज़रिए लोक-संसाधन की हिफ़ाज़त की सम्भावना है। *मनरेगा* का मूलमंत्र 'काम का अधिकार' और 'संसाधन का अधिकार' दोनों को *मनरेगा* के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है। श्रम के साथ-साथ *मनरेगा* लोक-संसाधन की सुरक्षा के लिए ज़रूरी वित्त मुहैया करा सकता है। *मनरेगा* के तहत जल-दोहन, कुओं का निर्माण, वन सुरक्षा, रोपणियों का निर्माण, गोशालाओं का निर्माण, वनीकरण जैसे कई कार्य किए जा सकते हैं। इससे न सिर्फ व्यक्तियों की वित्तीय व सामाजिक सुरक्षा बेहतर की जा सकती है, बल्कि लोक-संसाधन में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता और उन तक पहुँच के ज़रिए जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार लाया जा सकता है।

कुछ करने को

गतिविधि 1 : यह समझना कि *मनरेगा* कैसे लोक-संसाधन की हिफ़ाज़त में मददगार हो सकता है

इस गतिविधि को कक्षा के पंचायत कार्यालय के दौरे के रूप में किया जा सकता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी गाँव में *मनरेगा* के कामकाज को समझेंगे। विद्यार्थी पंचायत सदस्यों से निम्नलिखित सवाल पूछ सकते हैं :

1. क्या गाँव में *मनरेगा* का क्रियान्वयन हो रहा है?
2. गाँव में कुल कितने परिवार हैं और इनमें से कितनों के पास *मनरेगा* कार्ड है?
3. पिछले एक वर्ष में गाँव में *मनरेगा* के अन्तर्गत किए गए विभिन्न कामों की सूची बताएँ, और यह कि प्रत्येक गतिविधि में गाँव के कितने लोगों को रोज़गार मिला?
4. गाँव में कितने तरह के लोक-संसाधन हैं?
5. गाँव के इन लोक-संसाधन (झीलों, गोचरों, थोप, कुओं वगैरह) में *मनरेगा* के तहत किए गए काम का विवरण दें।
6. लोक-संसाधन में *मनरेगा* कार्यों से व्यक्तियों या गाँव को क्या लाभ मिले?

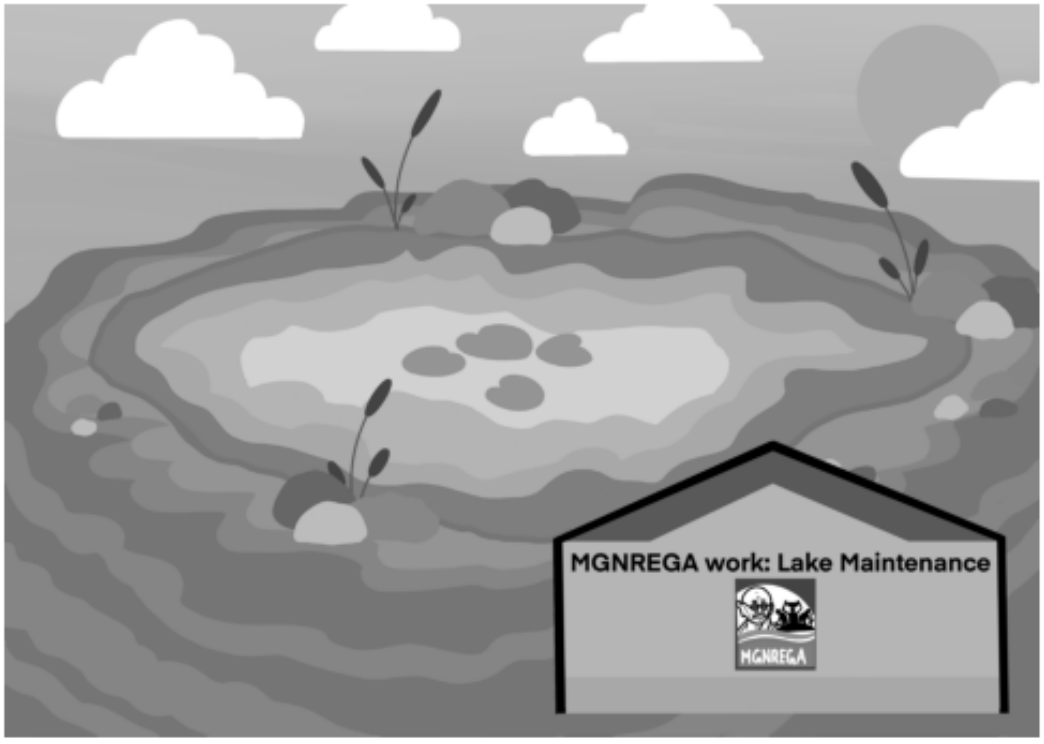

गतिविधि 2 : गाँव में लोक-संसाधनों का मानचित्रण

कक्षा को समूहों में बाँट दीजिए और उनसे कहिए कि वे गतिविधि 1 में उल्लिखित लोक-संसाधनों के बारे में निम्नलिखित कार्य करें :

1. गाँव में लोक-संसाधनों का दौरा करें और लोक-संसाधनों की हालत और उसके आस-पास चल रही गतिविधियों का विस्तार में अवलोकन करें।
2. अपने मैदानी भ्रमण के आधार पर लोक-संसाधनों का एक विवरण तैयार करें। इस विवरण में यह बताया जाए कि लोक-संसाधनों के आस-पास क्या था, स्वयं लोक-संसाधन की स्थिति क्या थी, भ्रमण के दौरान जो गतिविधियाँ देखने को मिलीं, लोक-संसाधन पर कोई इमारत/ढाँचा या पेड़ वगैरह।
3. उन कामों की सूची बनाएँ जो इन लोक-संसाधनों को बेहतर बनाने और इनके वार्षिक रख-रखाव के लिए किए जा सकते हैं।

मज़े के लिए

विद्यार्थियों से कहिए कि जिन लोक-संसाधनों का दौरा उन्होंने किया है, प्राकृतिक चीज़ों (पत्थर, मिट्टी, टहनियाँ, बीज वगैरह) का उपयोग करके उनके छोटे-छोटे मॉडल बनाएँ।

वर्कशीट 3 :

हमारे जीवन में वृक्ष - और उनके विविध उपयोग

'कहाँ गए सारे गुण्डा थोप?' कथा-पुस्तक पर आधारित

उद्देश्य :

- अपने लोक-संसाधन के वृक्षों के उपयोगों को जानना।
- यह समझना कि लोक-संसाधन में वृक्षों को बचाना क्यों ज़रूरी है।

लोक-संसाधन में पेड़ों के क्या उपयोग हैं?

पेड़ हमारे लिए कई तरह से उपयोगी हैं और मनुष्यों के अलावा कई प्रजातियों को सहारा देते हैं। यदि आप दोपहरी में किसी पेड़ के नीचे खड़े हुए हैं, तो आपने ध्यान दिया होगा कि खुली जगह के मुक़ाबले पेड़ के नीचे ठण्डक होती है - तापमान में कई डिग्री का अन्तर होता है। अर्थात गर्मियों में पेड़ हमें छाया देकर धूप से बचाते हैं और वातावरण को ठण्डा रखते हैं। पेड़ प्रदूषण नियंत्रण के लिहाज़ से भी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उनकी पत्तियों में विषैली गैसों को सोखने की क्षमता होती है। धूल पेड़ों की पत्तियों पर बैठ जाती है, जो अन्यथा हमारी साँस में आ जाएगी। पेड़ हमारे मनपसन्द फलों के स्रोत हैं और पूजा में काम आने वाले फूलों के भी। पत्तियों और बीजों के भी कई उपयोग हैं। उदाहरण के लिए, कटहल की पत्तियों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में भी होता है जबकि करंज के बीजों से तेल निकाला जाता है। पेड़ों की लकड़ी का उपयोग ईंधन के रूप में और फर्नीचर बनाने में किया जाता है। यहाँ तक कि वीणा जैसे वाद्य यंत्र भी लकड़ी से बनते हैं। कई पेड़ों के अधिकांश हिस्सों में औषधीय गुण होते हैं - जैसे नीम के सारे हिस्सों का कोई-न-कोई औषधीय उपयोग होता है। पेड़ों के पारिस्थितिक उपयोग भी अनगिनत हैं। पेड़ समृद्ध जैव विविधता के घर हैं - जैसे पक्षी, कीट और स्तनधारी। पेड़ आँधियों के लिए रुकावट का काम करते हैं और जड़ें मिट्टी को बाँधकर अपरदन को रोकती हैं।

हमें पेड़ों की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि...

पेड़ हमारे लिए कई तरह से उपयोगी हैं। चूँकि पेड़ तापमान को कम रखने और प्रदूषण नियंत्रण में भी मदद करते हैं, इसलिए जलवायु परिवर्तन तथा वैश्विक तपन (ग्लोबल वार्मिंग) के प्रभाव को कम करने में भी वे महत्त्वपूर्ण हैं। मिट्टी की ऊपरी परत (टॉपसॉइल) को बह जाने या हवा के साथ उड़ जाने से रोकने के लिए भी पेड़ बचाना ज़रूरी है। यह टॉपसॉइल खेती के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई पेड़ पूजनीय होते हैं और उनका सांस्कृतिक व धार्मिक महत्त्व होता है। कई पेड़ इसलिए भी महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे धरोहर हैं - ख़ास तौर से बड़े और पुराने पेड़ जो गाँव-

मोहल्ले के इतिहास के साक्षी रहे हैं। पेड़ हमें आनन्दित भी करते हैं - पत्तियों की हरियाली, वे फल जिन्हें तोड़ना हमें अच्छा लगता है और वे खेल जो हम पेड़ों के आस-पास खेलते हैं। ये सब हमारी सेहत और ख़ुशहाली में योगदान देते हैं। तो क्या हमें पेड़ों को नहीं बचाना चाहिए?

कुछ करने को...

गतिविधि 1 : एक पेड़ का वर्णन करें

एक पेड़ चुनकर उसका अवलोकन करें। अपने शब्दों में उसकी शाखाओं, पत्तियों, छाल, फूलों, फलों और जड़ों का वर्णन करें। चाहें तो चित्र बनाकर भी वर्णन कर सकते हैं।

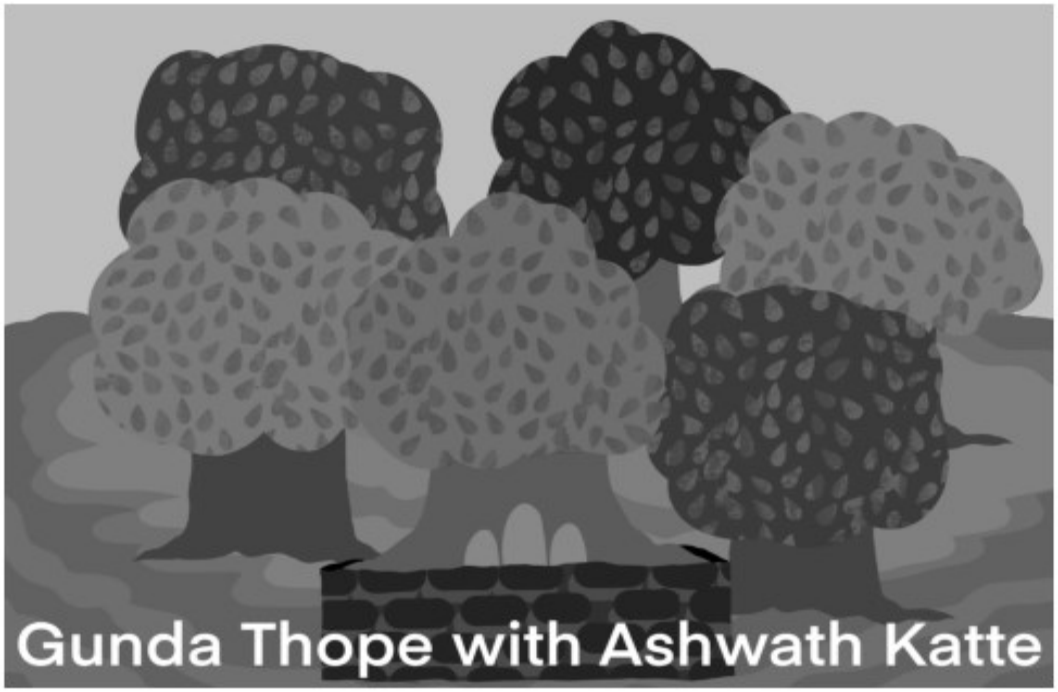

गतिविधि 2 : पेड़ों और उनके उपयोगों को पहचानें

झील, गुण्डा थोप, या उद्यान जैसे किसी लोक-संसाधन में पेड़ों को पहचानिए। यह जानकारी नीचे दी गई तालिका में भरें। इस काम में अपने गाँव-मोहल्ले के किसी बुज़ुर्ग की मदद लें।

क्रमांक	**पेड़ का अँग्रेज़ी नाम**	**पेड़ का स्थानीय नाम**	**पेड़ के कौन-से हिस्से उपयोगी हैं? (जैसे छाल, पत्तियाँ, फल, फूल, जड़)**	**इसका क्या उपयोग है? (आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उपयोग)**
उदाहरण 1	मैंगो	आम	फल, पत्तियाँ, टहनियाँ	फल - खाने के लिए (कच्चे या पके), अचार व अन्य व्यंजन बनाने के लिए पत्तियाँ - वंदनवार के लिए टहनियाँ - निर्माण कार्य में
1				
2				
3				

गतिविधि 3 : आस-पास के किसी पेड़ की जैव-विविधता का अवलोकन करें

अपने लोक-संसाधन में पेड़ों को देखें। कौन-सी जैव-विविधताएँ हैं जो पेड़ों के साथ अन्तर्क्रिया करती हैं? क्या आपको पक्षी, कीट, या जन्तु नज़र आ रहे हैं? अपने अवलोकन लिखकर या चित्र बनाकर बताएँ। नीचे दी गई तालिका की मदद ले सकते हैं।

क्रमांक	**पेड़ का नाम**	**जैव विविधता**	**अन्तर्क्रिया**
उदाहरण 1	आम	पक्षी	पेड़ पर घोंसला बनाते हैं
उदाहरण 2	आम	कौए	पेड़ की छाया में बैठते हैं, छाल को खरोंचते हैं

मज़े के लिए

1. एक बड़ा-सा काग़ज़ और कुछ रंगीन पेंसिल या क्रेयॉन ले लें। यदि ये चीज़ें नहीं हैं तो पेंसिल से भी काम चल जाएगा। लोक-संसाधन में किसी बड़े पेड़ के पास जाएँ। काग़ज़ को पेड़ की छाल पर जमाएँ और उस पर रंग चलाएँ। आपको काग़ज़ पर छाल का पैटर्न उभरता दिखाई देगा। यह काम लोक-संसाधन या उसके आस-पास के 3-4 पेड़ों के साथ करें। क्या आपको छाल के पैटर्न में अन्तर दिख रहे हैं?
2. पेड़ की टहनियों पर उगने वाली पत्तियों और फूलों को देखें। क्या कुछ फूल-पत्तियाँ ज़मीन पर भी गिरे हैं? ये पत्तियाँ और फूल बीनकर एक माला बनाइए। आप चाहें तो मुकुट, गजरा, कंठमाल या अन्य आभूषण भी बना सकते हैं। क्या आपके गाँव में अन्य लोग भी फूलों की मालाएँ बनाते हैं? यदि हाँ, वे उनका क्या उपयोग करते हैं?
3. पीपल के पेड़ से एक-दो बड़ी पत्तियाँ लीजिए। दो सप्ताह तक इन्हें पानी में डुबाकर रखिए। ध्यान रहे कि पानी बस इतना हो कि पत्तियाँ पूरी तरह डूबी रहें। दो सप्ताह बाद आप देखेंगे कि पत्तियों का हरा भाग तो झड़ गया है जबकि शिराएँ बची हुई हैं। पत्तियों को धूप में थोड़ी देर सूखने दें, जब तक कि वे सख़्त न हो जाएँ। अब आप इन पत्तियों पर चित्रकारी कर सकते हैं - रंग-बिरंगी ज्यामितीय आकृतियाँ या कोई ज़्यादा जटिल चित्र।
4. क्या लोक-संसाधन में आपके आस-पास कोई इमली का पेड़ है? इन पेड़ों से पके हुए फल तोड़कर उनके खट्टे-मीठे स्वाद का मज़ा लीजिए। लेकिन बीज बचाकर रख लीजिए - ये बाद में हॉपस्कॉच, चंगा, साँप-सीढ़ी, लूडो वगैरह खेलने में काम आएँगे।

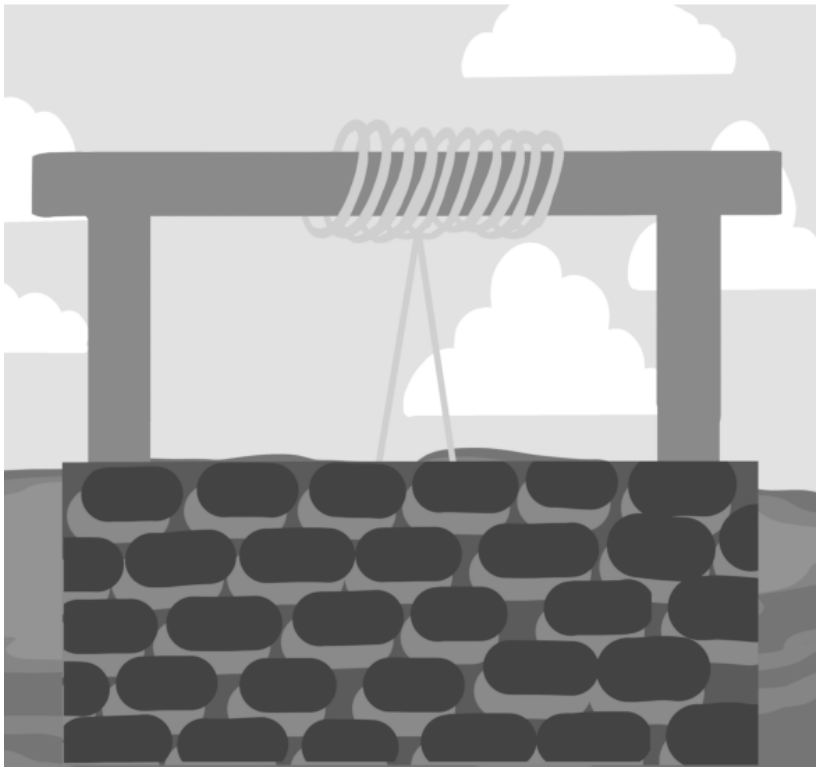

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय
बुरगुंटे विलेज, सरजापुरा होबली, अनेकल तालुका,
बिल्लापुरा ग्राम पंचायत, बेंगलूरु 562 125

80-66145136
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity

Instagram: @azimpremjiuniv

Twitter:@azimpremjiuniv